भागवत कथा-2

हर्षा कपाड़िया (B.Sc. in Microbiology, D.M.L.T.)

यह सच्चाई की राह में ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की टीचर्स द्वारा मिली हुई धमकियों पर ध्यान न देते हुए आ.ई.वि.वि. परिवार से जुड़ी एक और कन्या हर्षा कपाड़िया के वास्तविक कदम की कथा है।

Bhagawat Story-2

This is the true story of another girl Harsha Kapadia stepping towards the heights of Truth for joining in hand with the "AVV family" overlooking the threats and hurdles created by the teachers of Brahmakumari Ishwariya Vishwa Vidyalaya in her way.

पहले हर्षा बहन ब्रह्माकुमारी विद्यालय में ही शिक्षा ग्रहण कर रही थी। ब्रह्माकुमारियों से सुनी हुईं काट-पीट वाली थर्ड क्लास कागज़ की मुरलियों से उन्हें संतुष्टता नहीं मिल पा रही थी। अत: सच्चाई की खोज मन को सताने लगी। आजीवन कन्या रहकर पवित्र जीवन बिताने का लक्ष्य मन में दृढ़ हो रहा था।

Initially, Harsha Bahan used to have spiritual education in Brahmakumari Vidyalaya. She was short of satisfaction with the half knowledge residual third class Printed Paper Muralies; censored, edited, meddled; heard from Brahma Kumaris; Her intellect started to search the missing links of the Truth. Her determination to spend a pure life, lifelong was still strengthened in the search for Truth.

हर्षा बहन ने माइक्रो बायोलॉजी में अपना ग्रेजुएशन सन 2002 में कम्प्लीट किया था। वास्तव में उनके सम्बन्धी जन उन्हें अमेरिका में ही शादी कराकर सेटल कराना चाहते थे। यू.एस. में रहने वाली हर्षा बहन के मामा एक तरफ़ और दूसरी तरफ माता-पिता और भाई उनके ऊपर शादी करने के लिए दबाव डालने लगे।

Harsha Bahan was a graduate in micro biology from U.S.A. in 2002. Her parents and relatives wanted her to get married in U.S.A. itself and settle abroad. Her uncle who is a resident of U.S.A, as well her parents along with her brother started pressurizing her for marriage.

अब वक्त गुज़रते-2, ज्ञान-मुरलियों की व्याख्याओं में दिए गए इशारों के आधार पर जब हर्षा कपाड़िया को सत्यता का बोध हुआ, तब उस एकमात्र सच्चाई की राह पर फर्रुखाबाद की ओर कदम आगे बढ़ाने में हर्षा बहन ने देर नहीं की।

In course of time and study of some indications still appearing in clarified Muralies of knowledge, Miss. Harsha Kapadia could find the rays of realization towards the only one eternal Truth; she did not want to wait and waste precious time; she advanced towards Farrukhabad.

लगभग दो साल यू.एस.ए. में रहने के बाद उनकी दृढ़ इच्छा सफल हुई और उनको सच्चाई की राह मिल गई। एम.एस.सी. की लौकिक पढ़ाई भी अधूरी छोड़ दी और दिसम्बर, 2003 में वह फ़र्रुखाबाद आ.ई.वि.वि. परिवार के साथ जुड़ गई। तब राजकोट की ब्रह्माकुमारियों ने हर्षा कपाड़िया को धमकियाँ देनी शुरू कीं; क्योंकि वह अमेरिका जाने से पहले राजकोट की ब्रह्माकुमारियों से ही शिक्षा ले रही थी। उसके बाद हर्षा बहन के सामने आ पहुँचे उनके माता-पिता और भाई, जो उन्हें आ.ई.वि.वि. परिवार से अलग कराकर शादी कराने के लिए अपने साथ ले जाना चाहते थे।

Her search combined with effort came fruitful and she could see the way towards the Truth after a stay in U.S.A for about a period of two years. She left off her M.Sc in U.S.A. She joined the "AVV family" during December, 2003 at Farrukhabad. The Brahmakumaris of Rajkot, from where she used to attend Murali classes earlier, started threatening her. Her parents and brother reached Farrukhabad and started pressurizing her to take her away from the "AVV family" and get her married.

पुलिस वालों के सामने ही उनके ऊपर बहुत दबाव डाला गया, डराया, धमकाया; परंतु हर्षा बहन उस समय तक उन धमकियों पर ध्यान देने की स्थिति से बहुत दूर निकल चुकी थी। हर्षा बहन ता.14 दिसम्बर, 2003 को आ.ई.वि.वि. परिवार के साथ अपने-आप को ईश्वरीय सेवा के लिए समर्पित कर चुकी थी। अपनी स्थिति का वर्णन करते हुए और पुलिस वालों से सुरक्षा माँगते हुए हर्षा बहन ने 16 दिसम्बर, 2003 को दिल्ली, विजय विहार पुलिस थाने में प्रार्थना पत्र दिया, जिसे पुलिस वालों ने स्वीकार किया। ईश्वरीय ज्ञान संबंधित अपनी इच्छाएँ पूर्ण की हुई हर्षा बहन अब अपने आगे के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आ.ई.वि.वि. परिवार से जुड़ी रही।

They mounted up pressures even in the presence of Police; attempted to infuse fears, threatened; But Harsha Bahan has travelled much far away from the stage of caring any kind of threats and pressures. She surrendered herself for the cause of Godly Service and became part of the "AVV family" on 14th December, 2003. Explaining the situation and requesting for police protection from her parents and relatives, she has addressed a letter to Delhi, Rohini Police Station which was duly received by them in good senses. With the fruitfulness

achieved in respect to her spiritual desires and determinations, Harsha bahan's wishes fructified and from then, she stood advancing along with and as part of the "AVV family" towards further higher goals of spiritual enlightenment.

सन 2011 में जब बाँदा की एक कन्या मीना अपनी स्वेच्छा से आध्यात्मिक विश्वविद्यालय में दाखिल हुई, तब तत्कालीन मंत्री महोदय श्री निजामुद्दीन सिद्धिकी द्वारा पुलिस प्रशासन पर डाले गए दबाव से पुलिस अधिकारियों ने बड़ी भरी फोर्स लेकर अवैध रीति से विद्यालय में तोड़-फोड़ किया व कानूनी नियमों का पालन न करते हुए फर्रुखाबाद सेवाकेन्द्र में रहने वाली कन्याओं-माताओं के मौलिक अधिकारों का हनन किया। इसके पूर्व में घटित पुलिस प्रशासन व असामाजिक तत्वों द्वारा भागवत में शामिल हुई बहनों के ऊपर किए गए बर्बरतापूर्ण अत्याचार व जुल्मों से प्रताड़ित होकर हर्षा बहन ने आध्यात्मिक विश्वविद्यालय की तरफ से इलाहाबाद हाई कोर्ट में रिट पिटिशन दाखिल की जिसको हाई कोर्ट ने जनहित याचिका के रूप में स्वीकृत किया, जो आज तक भी लम्बित है।

During 2011, when one girl Meena from Banda, U.P., has joined the Adhyatmik Vishwa Vidyalaya at her own volition, the then honorable minister Shri Nizamuddin Sidhdhiki has pressurized the Police higher-ups and in result the police have intruded inside and used their energies in ransacking the house and beating the sisters and mothers of the "AVV" on spiritual service in an illegal way thereby violating all the legal as well police norms and repressing their right to live peacefully and right to religion as accorded by the Indian Constitution. Prior to this, having suffered intense agonies caused by the cruel, brutal, indecent behavior and harassments to the sisters of "AVV" participating in Bhagawat by the police in hands with anti-social elements, Harsha bahan has filed a writ petition in the High Court of Allahabad which was taken as public interest litigation by the High Court. And the said PIL is pending for adjudication as of now.